आलोक अग्रवाल

हमारे गाँव की आखिरी बारिश

नर्मदा नदी किनारे बसा गाँव खेड़ी। आम गाँवों जैसा गाँव – खेती है, बाग है, कच्चे-पक्के घर हैं और मिलजुलकर रहते सब लोग हैं। एक स्कूल भी है। गाँव के सभी बच्चे यहीं पढ़ते हैं।

बारिशों का मौसम शुरू होने को है। आज सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। कभी-कभी बिजली चमकती है और फिर बादल ज़ोर से गरजते हैं।

बारिश आते ही गंगाबिशन का मन नाचने लगता है। बड़ा मज़ा आता है उसे। बारिश में छपक-छपक कूदना, बहते पानी में कागज़ की नाव छोड़ना और फिर उसके पीछे दौड़ना। किनारे खड़े होकर तेज़ बहती नदी को घण्टों देखते रहना।

बारिश आते ही अम्मा और बाबा भी बहुत खुश हो जाते क्योंकि अब वे फसल बो सकेंगे। पर गंगा ने देखा कि इस बार बारिश आती देख उसके बाबा, काका सभी चिन्ता में पड़ गए। आज स्कूल की छुट्टी है। गंगाबिशन तीसरी कक्षा में पढ़ता है। इस बार गर्मी की छुट्टी के बाद स्कूल खुला तो मास्टरजी ने बताया कि कुछ दिनों बाद स्कूल बन्द होने वाला है। स्कूल गाँव से हटाया जा रहा है।

सुबह जब माँ खाना बना रही थी, तब गंगा ने अपने बाबा से पूछ ही लिया, "बाबा, हमारा स्कूल क्यों बन्द हो रहा है?"

"हमारा गाँव डूब रहा है।" बाबा ने जबाब दिया।

"डूब रहा है! मगर क्यों?" गंगा हैरान था।

"क्योंकि अपनी नर्मदा माई पर एक मोटा (बड़ा) बाँध बना दिया है। उसमें पानी भरते ही हमारा गाँव डूब जाएगा।" बाबा ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा।

"और अपनी ज़मीन?"

"वो भी डूब जाएगी।" बाबा बोले।

तभी गंगाबिशन को याद आया कि कुछ दिन पहले जब वह स्कूल में था तब गाँव में एक पीली बत्ती वाली जीपगाड़ी आई थी। उसमें एक साहब और कुछ पुलिस वाले थे। साहब ने पटेल और गाँववालों को बुलाकर कुछ कागज़ दिए थे। फिर कुछ कहा था।

"कौन बना रहा है बाँध को?" गंगा कुछ समझ नहीं पा रहा था।

"सरकार।" बाबा ने जबाब दिया।

"तो सरकार हमें ज़मीन देगी, गाँव देगी?"

"नहीं।"

"तो फिर हम कहाँ जाएँगे?" गंगा ने घबराते हुए पूछा।

"पता नहीं। सरकार ने बहुत थोड़ा-सा पैसा दिया है। पर उससे न तो ज़मीन खरीद सकते हैं, ना ही मकान बना सकते हैं। भगवान जाने क्या होगा?" बाबा ने लम्बी साँस भरते हुए कहा।

"बबलू, श्यामा, गगन, रामकिशन, फजीत, रामप्यारी, पुष्पा सभी चले जाएँगे?" गंगा को अपने दोस्तों की याद आने लगी।

"हाँ। सभी।"

"कहाँ?"

"पता नहीं।"

गंगा का दिल बैठने लगा। उसको सब कुछ याद आने लगा। पेड़ पर चढ़कर अमिया तोड़ना, दोस्तों के साथ ढोर चराते हुए मस्ती करना, हाट और भैरो बाबा के मेले में बैलगाड़ी से जाना और खूब मज़े करना। जलेबी खाना, झूला झूलना। यह सब कुछ न रहेगा।

गंगा को स्कूल की पढ़ाई और बदमाशियाँ भी याद आने लगीं। अचानक सब कुछ बदला-सा लगने लगा। रामू जिससे उसका रोज़ झगड़ा होता था, अब उसे उससे कोई शिकायत न थी। कल तक खूँखार लगने वाले मास्टरजी भी अब अच्छे लगने लगे थे।

अपना खेत! बाबा के लिए कई बार वो ही रोटी लेकर जाता था और देखता रहता बाबा को हल चलाते, खेती करते। और देखता भोलू और मोती को भी, जो घर के बैल नहीं गंगा के प्यारे दोस्त हैं, मस्ती के साथ पैर जमाकर खेत में चलते हुए। गेहूँ कटने के बाद उसके भूसे पर खूब कूदा-फाँदी करते थे। अमरूद, बेर के खूब सारे पेड़ हैं खेत पर। अब न खेत रहेगा, न पेड़ और ना ही भोलू और मोती ।

गाँव के बदरी काका, गबरू दादा, रईस चाचा, सभी कितना प्यार करते हैं उसे। कोई चवन्नी देता है, कोई अठन्नी। समोती माई की मीठी कहानियाँ और मीठी गोलियाँ याद आने लगीं। कौन सुनाएगा अब कहानियाँ? और रामप्यारी? गंगा और रामप्यारी हमेशा साथ स्कूल जाते-आते हैं। कक्षा में भी साथ-साथ बैठते हैं। एक-दूसरे की किताबों में कितने ही चित्र बनाए हैं दोनों ने। खाना भी दोनों बाँटकर खाते हैं। गंगा को उसकी बातें बड़ी अच्छी लगतीं, मन करता कि उससे बात करता ही रहे। वो भी चली जाएगी?

गंगाबिशन का मन ज़ोर-ज़ोर से रोने को किया। उसने बाबा से धीरे-से पूछा, "हम कब जाएँगे?"

"साहब कहते हैं कि बारिश होने पर बाँध में पानी भरे, उसके पहले ही जाना होगा।" बाबा ने असहाय होकर कहा ।

"पर कहीं जाने को नहीं है तो कहाँ जाएँगे?" गंगा ने बाबा का हाथ पकड़कर पूछा।

"नहीं जाएँगे तो पुलिस भगा देगी।" बाबा को पीली बत्ती वाली जीपगाड़ी के साहब की बात याद आ गई।

गंगा ने देखा चूल्हे के पास बैठी माँ पल्लू से आँखें पोंछ रही है। जिन आँसुओं को गंगा रोके बैठा था, माँ न रोक सकी।

बाहर तेज़ बारिश गिरने लगी। पर आज गंगा का मन कूदकर बाहर गली में जाने को न हुआ। माँ ने उसे रोटी खाने के लिए आवाज़ दी। पर गंगा धीरे-धीरे चलकर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। वो बाहर देखने लगा। इस पहली बारिश में खेलने बबलू, गगन, फजीत, श्यामा कोई भी गली में नहीं था। सब अपने-अपने दरवाज़ों पर खड़े, सहमे हुए गिरते पानी को देख रहे थे। शायद उन्होंने भी अपने बाबा से पूछ लिया होगा कि उनका स्कूल क्यों बन्द हो रहा है।